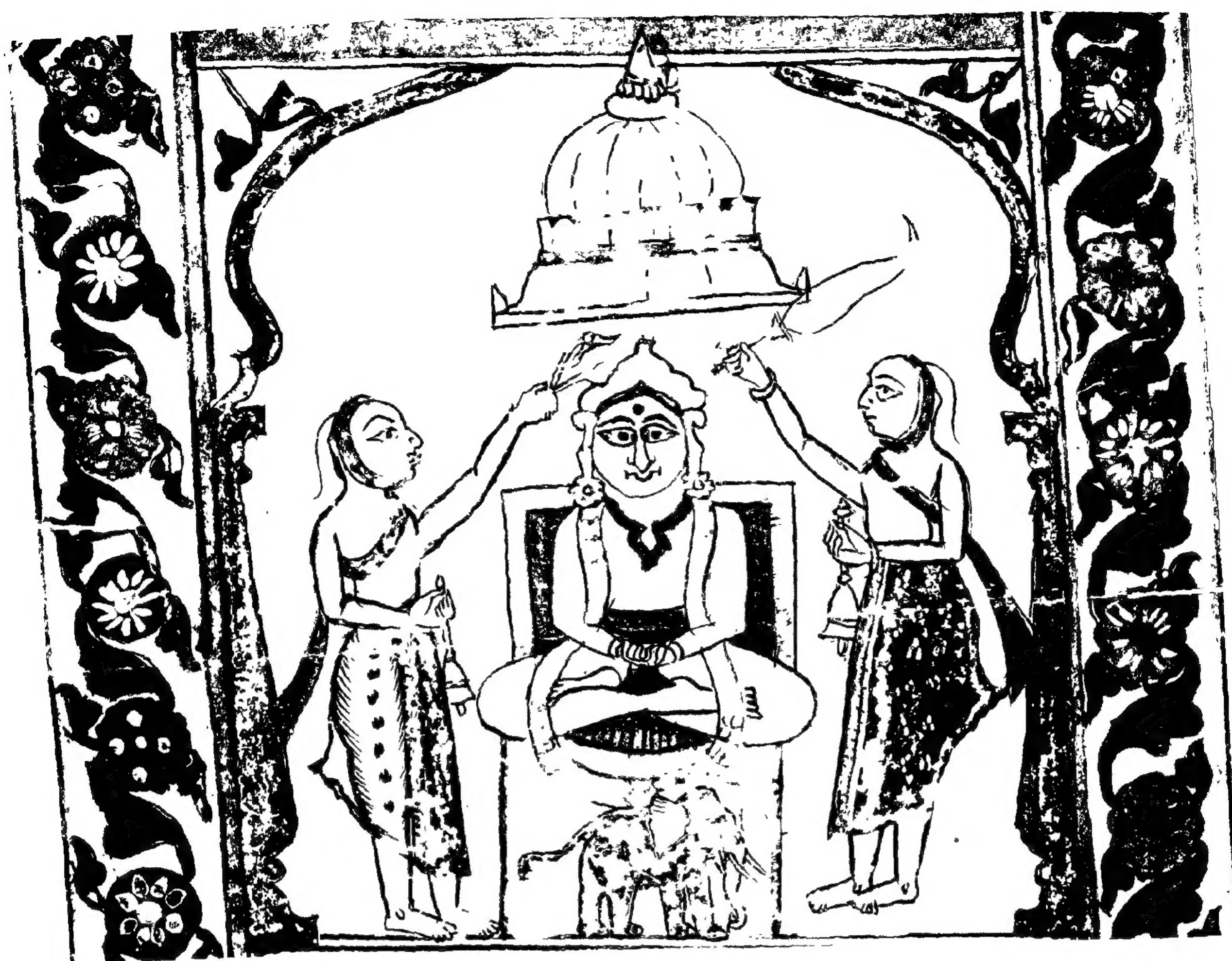
श्वरनामुषथीवांणीसांभलीएहवी॥श्रीपरमेश्वरजीनेंपुछ्युं
तारेश्रीसिद्धाचलजीनुंमाहात्मासंबंधनाषवर्णव्युंतिवारेंश्री
भगवंतनेंपुछीनेंश्रीपुंडरीकजीइं।पांचकोडिमुनिसंघातें॥
अणसणकरीएकमासनीसंलेषणा।करी [illegible] कर्मक्षयकरं
वेवी [illegible] त्रिछ्ड [illegible] तीर्थनइंत
[illegible] वात [illegible] मापुंडरीक
[illegible]
मोटाजांणीनें [illegible] संघकाढनें श्रीसिद्धा
चलजीइंआव्या श्रीसिद्धाचलजी उपरवहता [illegible]
[illegible]
अनेंकुंडनेंजराजिर्णदेषीने भरतचक्रीइं [illegible] महाराज
नेंपुछुंजेपांडुका अनें कुंडजिर्णकिमथ [illegible]
[illegible] जरा आतिनेंचोवीसीथइगइ श्रीकेवलज्ञानि
नामातिर्थकरथइगया तेहनाएगला अनेंभरतराजानें
कुंडठ एघणाकालथी जराजरणथइगयाछें [illegible]
[illegible] कुंडनुंनांमभरतचक्रुं तिहांथीवलि
आगलेचाल्या श्रीसिद्धाचलजीउपरेंचलिउद्धारकरावानां
बापमांहे श्रीऋषभदेवजीनोकराव्यो [illegible] श्री
श्रीपुंडरिकगणधरनीथापनाकरीरायणहेठलेंश्रीऋषभदेव
नीपादुकाथापप्रदक्षणाकरीनें।बिजीपणसर्वजथांवलक
रणीकरी [illegible] श्रीगिरनारतिर्थजात्रानाअभि
प्राय भरतराजानाथया एहवेनमीवनमीविद्याधरमुनि
भरतपासेंआवीनें [illegible] जेअमनेंमोक्षपद।श्रीसि
द्धाचलजीउपरेंकहुंछे।तिवारेंभरतेंतेमुनिनेंकहुं।जे
आत्मानीकार्यसिद्धीथाइंतिमकरो।तिवारेंतेबिहुंराजे
ऋषिनइं [illegible] फागुणशुदिदसमनें
दिवसें।बेकोडिमुनिराजसंघातें।सिद्धपदवर्या।वलिभर
तराजासेत्रुंजीनदीइंनाह्या।तेनदीनेंकांठेच्यारदीसें॥च
च्यारदिसेंधवनछें। पुर्वदिसेंसूर्यवन॥ ॥पांछमदिसें
चंद्रवन॥२॥दक्षणदिसेंलक्ष्मिवन। ॥उत्तरदिसेंकुसुमव
न॥४॥एच्यारेवननीसोभाजोता॥ [illegible] ॥तिहां
आगलेजांता।एकजटाधारितापसबेठोछे तेहनेंभरतरा
जाइंपुछुंजेतमेंहस्युं।कमबेठाछो।तिवारेंतापसकहेंछे।मुझनें
श्रीऋषभदेवनाइं।कहुंछेजेश्रीचंद्रप्रभ [illegible] आठमातिर्थ
करनेंवारे [illegible] बाहु
बुतें [illegible] नें। [illegible] श्रीचंद्रप्रभजीनुंप्रसाद
भरतराजाइंकराव्यो॥वलिआगलेंचाल्या॥एसेंप्रभ

वनमी।विद्याधरनी।वीसक्रपुत्रीतथवीआदेदेइनेंअणसं
णकरीमोक्षगई।केतलाएकआचार्यइमकहेंछे।जेदवंग
नाथइ तेहनीतिहांथाघना भरतराजाइंकरी।तिवारेंकद
गिरिएहवुंनामथयुं।वलिआगलिचाल्या।जातांमार्ग
नेंविषेः।एकगिरिनांसिषरआव्यो।तिवारेंसक्तिसिंहएहवुंन
ंनामपमछे।तेभरतराजानोभत्रिजोछे।तेसक्तिसींहनेंभरत
राजाइंपूछ्युं।जेआसिषरनेंसुंछे।तिवारेंसक्तिसिंहकहेंछेंक
दंबगिरिनामापर्वतछे।।[illegible] सिधाचलनीटुंकछे।अ
ति [illegible] करीनवाणनाम [illegible] भगवान।।ते
हनागधणधर कदंवरिषीएहवेंनामेंतेऋनभगवानेंइम
कह्यु जे तुमनेंइणेंठेंगसिद्धपदछेतेवातसांभलिनेंकदंबरि
षीपोतानापरिवारसहित श्रीसिधाचलउपरेंअणसणकरी
कर्मक्षयकरीमोक्षपोहोता।तदाकालथी।एपर्वतनुंनामक
दंबगिरिथयुं।१।वलिआगलिचाल्या।तिहांएकटुंकआव्यो
तिवारेंसक्तिसिंहनेंवलिपुछ्युंभरतें।आकुणपर्वतछे।तिवारें
सक्तिसिंहकहें एतलोछंजनामेंगिरि एपर्वत।बाहुबलिजी
मोक्षपोहोत्याछे।तिहांभरतें।बाहुबलिजीनोप्रसादकराव्यो
ते।[illegible]
[illegible]
ते [illegible] ।।तिहांभरतराजापुर्वेंश्रीरिषभदेवनुंसाधवाग
याता।तिहांमलवराजाइंरोगमुक्या।तिवारेंमनुष्यघणामरवा
लागा।एहवेंअवसरेंकोइकचारणमुनितिहांआव्या।तेमुनी
इंपूछ्युं।जेआवतामनुष्यसंग्रामविनाकिममरेछे।तिवारेंभर
तराजाइंकह्यु।हेस्वामिकाइंषबरपडतीनथी।तिवारेंमु
नीकहें।हेभरतराजातुमलवनेंराजाइंरोगमुक्याछे।तेका
रण।आनांदनापाणीनासपरसथकीरोगजासे।[illegible]कह
नेंवारेंणुंकांत [illegible] ।तेमजलि।तेनदीनापाणीनीसवन
[illegible]
एकभरतराजानाइंछहाथीहतोतेतिहांकालप्राप्तिथ
यो।तिहांभरतराजाइं।।हस्तिनागपुरगाममवसाव्युं।।तिहां
श्रीरूषभदेवनोप्रसादकराव्यो।तदाकालेंहस्तकल्पनामेंति
र्थप्रवर्त्युं।।नमःतिथप्रमुख।।१।।तिहांथीगीरीनारपर्वतें
आव्या।तिहांश्रीनेमनाथनां।त्रिणकल्याणकछे।उद्धारकरु
तिहांश्रीनेमीश्वरजीनोप्रसादकराव्यो।तिवारेश्रीगीरनार
तिर्थप्रवर्त्युं।।च्यारदिसेंच्यारदर्वाजाछें।तेउपरेंच्यारप्रसादक
राव्या।।तिहांथीवरनोनामांपर्वतदेषाइछे।तेवरनपर्वत
नेंविषे।वरनोनामाराक्षसरहेछे।तेसंघनें।तथाप्रजाउप
रेंउपद्रवघणोकरेंछे।तेकोइनेंवस्यआवतोनथी।तेवातसां
भलीभरतेंतराजाइं।।सुषेणनामापोतानो।।सेनानीमें

का[illegible]॥ तेसेनोनी।बरकाराऋनेंजितितें।सक्तिसिदनेपगे
लाग्या।नरतराजाइं बरकानाउपदेसदेइनेंसमकितपमा:
ड्या।तिहांनरतराजाइं।ऋषभजीनोप्रसादकराव्यो।[illegible]नरत
[illegible]॥तिहांबरकाराइसनेंमोर
छदेसनो[illegible] धणायकथाच्या।तिहांथी नरतराजा आवइ बूड
आव्या।तिहांपरमेस्वरनोप्रसादकराव्यो।तिहांथीसमेतसीष
रेआव्या।तिहांपरमेस्वरनापरसादकराव्या।इम अनेकनर
तराजाइं तिर्थथापनाकीधी।प्रथमउधार नरतराजानो॥ते
मां[illegible]॥श्रीसिद्धाचलतवर्त्तमानचोवी
सिइं श्रीऋषभनोपुत्र द्रवणजी तेहनावेपुत्र द्रविड वारि
ल तेविकंनाईराज्यनेअर्थ कलेसकरताथका चोमासंआ
वु तिवार संग्राममां दसकोडिमाणसक्षयथयुं तेदवेसरदरी
उआवी।तिहांगयातिहां तापसनाउनवनाछे तापसगुरुने
[illegible]
[illegible]
[illegible]।तिवन
[illegible] तिहांवारलमुनिन
मुषथा। श्रीसद्धाचलजीनुं। माहातमसांभली। चारणमु:
नीनाऋषषकी। श्रीसिद्धाचलजीनुं महातमसांभलि।[illegible]
[illegible]
मार्गमां घणाहंस एकतलावनेंकांठे एकठाथयाछे तेम
ध्येएकवृधहंस सक्तिइसंदछे तेतीहांरह्योछे।विजासर्वम
लषनोपगरवोसांभलिनें उडिगयां तेवृधहंस छेतिआव
ताइंआव्यो तेहनें फालिइं पांणिपाने तिहांथीहसनेंसा
थेलीधो तेहंसनें[illegible]द्धाचलजीउपरें।[illegible]अणसणकरावुं।ते
अणसणआराधीनें आठमेंदेवलोकदेवताथयो।तिहां
थी अवधिज्ञानेंजोतें श्रीसिद्धाचलजीनोउपगारजाणी श्री
सिधाचलजीनेंवोप्रसादकराव्या।तदाकालथीहंसावतारा
ख्यनामेंतिर्थप्रवर्त्त्यं।तेसीधाचलजीनोमहातमदेषी।चारण
मुनिपासेंचारित्रलेई।सिद्धाचलजीउपरें।अणसणकरीका
र्त्तिकशुदिपुनिमदिनें दसकोडिसंघातें श्रीसिद्धाचलजी
उपरें मोक्षगया॥नमोस्तु॥श्रीसीद्धाचल॥विमलाचला
यनमः॥ इतिश्री ऋषभदेवनोवर्णनसंपुर्ण॥ श्री॥श्री



॥श्रीसिधाचलजी [illegible] अजितनाथपरमेश्वरजीः चोमा:
सुं रह्या तिहां सगधर्म एहवे नामें पोतानो सिष्यसाथें पांणी नोः
संबल लेई श्रीसिधाचलजीउपरे. एकजिनादर्शनने आवें:
बे एहवे मध्यानसमें थयो [illegible] मुनीउदक [illegible] मुंकी नें बि
सांमबेठा एहवें अकसमात कागडो [illegible] मारीः पांणि
नीगयुं इननें कषायउपनो तिवारें मुनिइं कागडानें स:
रापदीधो जारे इहपापी पंषी ताहरुं इहां काम नहीं॥ तदा
[illegible]
[illegible]
सं नही तेमाटे सदायकासुं पांणि रुंध्यो तदा काग नथी तेवें कां:
णे उलषा जोतथई एअजितनाथपरमेश्वरजी आव्या तेमु
नीनें कह्युं तमारी कार्यनी सिधी इहांछे तेकनीतिहां अणस:
णकरी मोक्षेगया तिवारपछि अजितनाथपरमेश्वरजीना:
समवसरणनी रचना थई तसमवसरणनें विषेंबेसीनें देसना
कहीधर्मदेसना सांभली अनेक प्राणि वितरागनी वाणी
वितनें विषें आणि प्रतिबोधपांमी चारित्रलेई सकलकर्मः
क्षयकरी॥ [illegible] ॥ [illegible] अजितनाथनमः॥ स
[illegible] सगरचक्रवर्त्ती [illegible] पुत्र॥ जिनु
[illegible] सगरचक्रवर्त्तीनी आज्ञा मागीने अष्टा
ष्टापदतिर्थे पोताने तिर्थनी जात्राकरीनें घणीरें पाम्यां अ
जांणकुं जे आगलें पंचमकालविषम छें एतलामांहें ति
र्थ [illegible] थाइ होइ तो तिर्थनें रोषुंषुं थाइ एहवुं विचारि
नें तेहनुं रषोलुं करीनें अष्टापदपर्वतनें हजारजोजनचक
नी षाइ करी ते षाइ षोदता भुवनपतिना देवताना भुव:
ननें विषें उपघात थावा लागो तिवारें भुवनपतिना देवता
कोपायमान थावा लागा तिवारें एककोरें जोवें तो अष्टापद
तिर्थ एककोरें सगरचक्रवर्त्तीना पुत्र एहवो विचारीनें कोपस
मावीनें जिनुकुमरनें आविनें कह्युं देराजपुत्रो तुमें हवें षाइ
षोदसोमां अमाराभुवननें विषें उपद्रव्य थाइ छें इम कहीनें
॥भुवनपतिना देवता [illegible] गया॥ तिवारपछि जिनुकु
मरें विचार्युं जे षाइ तो कें तलेंकका लें बुराय एतलामाटें पा
णीहोइ तोरुंडुं इंम विचारनें करीनें गंगा नदीनो प्रवाह
वाल्यो [illegible] षाइ भराणी तिवारें भुवनपतिनाघरनें विषे
पांणीनो उपद्रव्य थयो तिवारें नागकुमारदेवदेवता॥ कोपा
यमान थइनें आगनि ज्वालाइं करीनें बालि भस्मकर्या॥
तिवारें प्रधानें लोकेंविचारकर्यो जइवें चक्रवर्त्तिनइं जेइ



नेसंक्रमषदेषाणीइं तेमाटें [illegible] सर्वसैन्यचयषम
कीनेबलीमरीइं एहवइ [illegible] जेमाहा अन
यथा तोदेषीनें [illegible] रूपकरी त्रसकरमें
आवीनें [illegible] जावी सैन्यलेइनें अजेपाइं अ
वीनें [illegible] पुत्रनंकलनवरषेधंलेई नगरमें आवी
चक्रवर्त्ति [illegible] दरवारें नजिक आवी विलापकरवा
लागो [illegible] चक्रवर्त्तिपाने ब्राह्मणपासे आव्या
ब्राह्मणनेंपुछ्युं [illegible] प्रश्नकहेंछेजेंतें
हनेंसापिनस्या [illegible]
[illegible] जोकुमारी [illegible] जीदनथ
यें तेतेनापृजापालचक्रवर्त्ति [illegible]
[illegible]
कुमारिराषकिहाये [illegible] सगरचक्रवर्त्तिइंक
[illegible] मारिरीहा [illegible] छे तिवारें सगरना
[illegible] कुमारीनथ
तिवारें [illegible] वारे
सगरचक्रवर्त्ति [illegible] समका [illegible] लागो ति
[illegible]
[illegible] तिवारेंसगरचक्रवर्त्ति [illegible] तसमि
[illegible] पुत्रनो अ
[illegible] आवी तिवारें इंद्रे [illegible]
[illegible] जितनाथ
[illegible] आवी [illegible]
[illegible] सासन
[illegible] तिवारेंसमनामा [illegible]
[illegible] लिवीनष
[illegible] सिद्धाचलजीनें [illegible]
घसहित तिवारें [illegible] जेगंगानदी
नेप्रवाहमां नगरदेशलणा छे तिवारें जिन
कुमानोपुत्र भगीरथतेहनें आज्ञाकरी सगरचक्रवर्त्तिसं
घसहित श्रीसि [illegible] तिर्थनोउद्धारकीधो एह
वेंइंद्रेंवीनतीकरी जेश्रीसिद्धाचलजीजेहवुं अदभुततिर्थछे
अनेंआगलिंकालतोविषमछे एतलामाटेंसमुद्रलावोतो
र्थनोरषोपुथाइं एहवुंभागीरथ पण गंगानेंकाठें करिआ
व्या [illegible] हरितसिद्धाईपछवा
लागो तिवारें स्वस्तिकदेवनादरीतलेइनें श्रीहिमनावा
[illegible] तिवारें इंद्रे सागरनें विनतीकरी [illegible]



[illegible] तिवारे सगर नै दीक्षा नती करी आ
नाइ दरांत वीस लाख वेग लो रसै एहवा श्री अजितनाथ नै
वारे सगर चक्रवर्ति हुं संघ काढी नै उधार कर्यो श्री अजितप्रभ
श्री सघा वतिजिथी विहार करता हुवा पोतानु सासन सिंहसे
न प्रमुख ९५ गणधर एक लाख साधु फाल्गुण प्रमुख एक
लाख त्रीस हजार २० साधवी बे लाख ९८ हजार श्रावक पांच
लाख चोपन हजार श्राविका साढा च्यारसे धनुष देहमान बो
होतर लाख पूर्वनु आयषु कंचन वरण सरीर गज लंछन स
हस्र पुरुष संघाते दिक्षा लिधी हजार पुरुष साथे श्री समेत
सिखर उपरे सिधि पद वर्या ।। एहवा श्री अजितनाथ जि
न परमेश्वर तीन ।। वार ।। वार ।। वांदु ।। नमस्कार ।। श्री मुनि
गिरा ।। श्री विमल चंद्र गिरा [illegible] ।। श्री श्री श्री



।। त्रिजा श्री संभवनाथ परमेश्वरजी।। श्री सिधाचलजीइ : आ
समोसर्या।। समवसरणनी रचना करी।। श्री त्रिजा श्री संभव
नाथजी।। देशनानेविषे श्री सिधाचलजी माहात्म्य वर्णव्यो:
ते माहात्म्य भव्यप्राणिइं सांभलि प्रतिबोधपामी संसारत्याग
करी चारित्र लेइने परमेस्वरजीने पोताना आतमानी काय
नी सिधी पुछी ए श्री सिधाचलजी उपरें कार्यनिसिधी पोतानी:
जाणी अणसण करी सकलकर्मक्षय करि मोक्षें पोहता श्री
संभवनाथजीने [illegible] लक्ष एक सो पांच गणधर बेलाष
साधु [illegible] लाष बत्रीसहजार साधवीजी बेलाष
त्राण हजार श्रावक छलाष छत्रीसहजार श्राविका एक
हजार [illegible] संघाते दिक्षा च्यारसे धनुषदेह साठलाषपुर्व
नुं आयुं कंचनवर्ण [illegible] हजार पुरुष संघाते:
सिधपदने वर्या। ए त्रीजा परमेश्वरजीने हुं वारवार वांदु छुं:

श्री संभवनाथनो संबंधः संपुर्ण।। ३।।



॥ इत्यंबोध॥ श्रीश्रीजिनदत्तसूरि॥ श्रीजिनकुशल [illegible] श्री
समाप्त॥ वारजिने [illegible]
श्रीश्रीजिनद [illegible]
मपम॥ अनेकनमयाणि श्रीसिद्धाचलजीनो महिमा
जाणि वार वार अनुमोदना करी माहात्म्य श्रीसिद्धाचल
नामरूं लघु गोनामरूं गानर्थनेविषे अतितकाले अनागतका
ले वर्त्तमानकाले एणकालनेविषे अनंताऋतीर्थंकर:
अनंतागणधर अनंताआचार्ज अनंताउपाध्याय अनंत
मुनिराज अनंतासाधवीउ अनंताश्रावक अनंतीश्राविका ए
तीर्थनेविषे सिधथया परमपदपाम्या तेनानामाटें सिधाचल
पर्वत श्रीपुंडरीकगणधर सीधवस्या तेदीवसथी एतीर्थ
नूंनामपुंडरीक: [illegible] श्रीश्रीजिनदत्तसूरिनेवारे
सेत्रुंजयएहवूंनामथयूं तेकहेंछे पूर्वेएकराजानेपाछलेभवे
जितसत्रुराजा त्यारआहारनो अभिग्रहलीधो श्रीसिद्धाचल
जीनरुं तिवारेंअनेरकरुं गहवाअभिग्रहसाहत आवाजेम
हित वउविधसंघसहित यात्राकरता श्रीसिधाचलजीनी जात्रा
ढीनकन्या मार्गआवतार कामसीरंदसनी अटवीआवी एह
वेंसरीरनोधर्मतो पुदगलिकछे राजानेसरीर अनपाणिविना
अटकें तिवारेंसर्वसंघे लोकेमलिनेराजानेकहें अभिग्रह
मुको पारणकरो जिनमतनेविषेकारेंछे एकउत्सर्ग अनेबी
जो अपवाद एहवूंसंघनाकहथीसांभली राजानेमन लगारे
मात्रमगुनही तिवारेंसर्वसंघचंतातुरथयो एहवेंसुंजेतो अस्त
थयो रात्रपडिसर्वेसूइरह्या एहवेंकवडजक्षआवी आचार्य
नेस्वपनदीधं प्रधाननेस्वपनदीधं॥ त्यारआदिनाथपुरुषन
स्वपनेंदीधं दिनप्रकटेरागकवडय श्रीसिद्धाचलजीनादर्श
नकरुंसर्वसंघनेगवोम प्रमाणिसर्वरजा : हर्षपाम्या प्रभातथ
यो संघानिकाथ: पम्या दिनप्रकट रागे जनोनेथया तितानेक
वलना [illegible] समारदसनीसिद्धाचलविषय॥ तदोश्रीसिधाचलप्रग
टकिधो सर्वसंघलोके: राजाप्रमुखे जात्राकरी अभिग्रहपूरो
थयो तिहांथीश्रीश्रीसंघवेरागो हवेंजितसत्रुराजा प्रमुखदर्श
नकरे पाछोबाहरथयोतिकलें इंमसाति आठवार राजगया
आव्या तिवारेंप्रधानकहें स्वामिइहांरहो तिवारेंराजाकहें उ

मं करो तो अमे इहां रहेस्यं इम कहीनें राजा तिहां रह्या विमल
पुरनगर वसाव्यूं तिहां राजा अनें हंसि नामा स्त्री अनें बीजी सा
रसी नामा स्त्री अनें हंसा नामा प्रधान ए त्रणें तिहां रह्या परमेश्व
रजीनी पूजा करें एहवे एक मुनि आव्या रूपें करी देखी राजा
नें प्रियजाणा इम करतां केतलेक दिवस थया तिवारें रा
जानें अंत अवस्था आवी तिवारें राजाइ श्रीसीद्धाचलजी उप
रें अणसण कर्यूं हंसनें सारसी ए बे स्त्री राजानी काम
ठे देहरा मांहे वननें विषे एकांतें एहवें राजानूं ध्यान [illegible]
गयुं तिवारें राजानो जीव आयु बांधीनें ते राजा मरीनें
सुर थयो अनें हंसी अनें सारसी बे स्त्रीइं वैराग्य पामी चा
रित्र लेइनें काल करीनें सौधर्म देवलोकें देवता थया ते
अवधि अणसण करीनें देवता थया ते अवधिज्ञानें जा
ण्युं पोताना भरतारनें एकाना अवतार जाणी एकानें [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
ते एक राजेंद्रे इव्यथी घणा सत्रुनें जीति पोतानें राज्य लीधुं
ते दिवसथी ए तीर्थनूं नाम सेत्रुंजय प्रगट थयुं वलि अव
यरी जे रागद्वेष तेहनें जीती निर्वाणपद वस्या ते माटे सेत्रुंज
य तिर्थ कहीइं ए तीर्थनें विषे इसेपर नामें राजा ए तीर्थना
दर्शन करीनें फरि आगलें पोताना पाप छित आलोव
लेइनें संजम लेइनें अणसण करी राजा मुगतें गया श्रीअ
भिनंदन प्रभुनें वज्रनाभ प्रमुख ११६ सोल गणधर साधु त्रि
ण लाख अजितजी प्रमुख छ लाख त्रिस हजार साधवी बे ला
ख अठावीस हजार श्रावक पांच लाख सतावीस हजार श्राव
का एक हजार पुरुष साथें दिक्षा लीधी साढा त्रिणसें धनूष
देहमान पंचास लाख पूर्व आउखु कंचनवर्ण कपि लंछन ह
जार एकनी राजसंघाते अणसण करी श्रीसमेतसिखरें । सि
धपदनें वर्या । एहवा श्री अभिनंदन स्वामिनें नमस्कार क
रवुं ; नमोस्तु श्रीसिद्धाचलाय नमः नमः ॥ ४॥ श्री श्री:



॥ हवे पांचमा सुमतिनाथ अरिहंत॥ श्री सिधचक्रे पधार्या दे
वताइं। समवसरणनी। रचना करी तेत्रिगडें वा सिंहासना
नें विषइं। श्री सिधचक्रजी महिमा। नरनारीने वखाण्या। केवलनाण
नव्यप्राणि। प्रतिबोधपामी तिर्थनोमहिमामोटो जांणी। वेर
नी आणी चारित्रलेई अणसणकरी सिधपदनें वर्या श्रीसु
मतिनाथजीइं सहस्रपुरुषसंघातें ऋषभलाख चमरप्रमुख १
००गणधर त्रिणलाखवीसहजार साध [illegible] पांचला
ख त्रिसहजारसाधवी बेलाख अढारहजार श्रावक पांचलाख
सोलहजार श्राविका। त्रिणसें धनुष देहमांन चालिसलाखपूर्व
नुं आयु कंचनवर्ण शरीर क्रौंचलंछन एकहजार मुनी
संघाते। श्री समेतसीखरजि उपरें सिधपदनें वर्यास्या। एहवा
श्रीसुमतिनाथनें वांदुं हुं॥ नमो [illegible]॥ [illegible] जयापवी
तायनमः नमः॥ श्री विमल [illegible] नमानमः॥५॥ श्री श्री



।।देवे ... ठायप्रयप्रकांजिननमस्क ... [illegible] ... ५।।
स्या श्रीसंभव ... जिन ... [illegible] ... नेमामालजीव:
यणा।श्रीविमलनाथजिनंसवनाथया।यणाजिवांसिधपदनेवस्य
श्रीपद्मप्रकाजइ सहस्रपुरषसंबनलीधं।श्रीजिसः१कमाएक
सी मानगणधर।त्रिणलाषठत्रिसहजारसाधारतिपकषचार
।विसहजारसाधवी।बिलाषछप्रानेरहजारश्रावक।पांचलाषपा
हजारश्राविका।अहिसेंधनूषदेहमा।त्रिमलाषपुरवनूं आउ
हेमवर्णपद्मलंछन।।आठसेंअनेंत्रीणसाधसंहित।श्रीसमेत
सिषरेसिधपदवस्या।।नमोस्तु श्रीविमलजिनवर जिननमस्को
...कडु।।६।।



॥८ वस [illegible] श्री [illegible] स [illegible]
विधार्नमकष: पचाएकगणधर त्रिणलाषसाध सामाप्रकमपचारल
ष त्रीएकहजारसाधवी बेलाषमलावनहजारश्रावक च्यारलाष
चाएकहजारश्राविका वसंधनुषदेहमान विमलाषपुर्वनं आउ
स्वास्तिकलंछन कंचनवर्ण विचरता श्रीसिधाचलजिनोसप
र्यकरी पाचसेंमुनिसंघातें श्रीसमेतसिषरें सिधपदनेंवस्या:
नमोस्तु श्रीपुंडरिकपर्वत: श्रीसिधाद्री विमलाद्रीनें नमस्का
र [illegible] श्री [illegible] नो [illegible]



॥देवश्री ७मा॥श्रीचंद्रप्रभस्वामी। एकहजारपुरुषसघात १ ल
क्षजायलि [illegible] दिन [illegible] बलाषपचवासहजारसाध
स मनः प्रफष त्रिणलाष असीहजारसाधवी बेलाषपंचासहजारश्रा
वक च्यारलाषएकाणहजारश्राविका दोढसोधनुषदेहमान
दसलाषपूर्वनूं आयु स्वेतवर्ण सांसलंछन एहवा श्रीचंद्रप्रभु
चंद्रा छाना आवीसमोसस्या समवसरणदेवेंरच्युं श्रीसीधाचलजी
नोगुणवर्णवकस्या तिहांचंद्रसेषरनामेराजा देसनांसांभली
तिर्थनोमहिमा मोटोजांणी उधारकरिकराव्यो श्रीचंद्रप्रभ
जी विहारकरता एकहजारपुरुषसं श्रीसमेतसिषरें सिध्प
दनेवस्या। नमो [illegible] श्री [illegible] नेनमः नमः॥श्रीबाहु
बलगिरिराजनेनमोनमः॥ [illegible] श्री॥ श्री॥ श्री॥



॥नवमा श्री [illegible] नाथजी [illegible] म श्व [illegible] जी एक हजार पुरुष सं[illegible]

बलभद्र [illegible] [illegible] [illegible]

: एक लाख विस हजार साधवी बे लाख ओगणत्रिस हजार श्रावक

च्यार लाख इकोतेर हजार श्राविका [illegible] साधना पद हमान बेला

[illegible] सेत वर्ण मगर लंछन विचरता श्री सिद्धाचलजी

ई आव्या श्री सिद्धाचलजी ऊपर एक हजार पुरुष संघाते श्री स

म्मेत [illegible] मोक्षपद पाम्या: नमास्का: श्री सिद्धादी: श्री विमल

चलजीनां नमस्कार थाओ॥ ९॥



॥ [illegible] नमो श्री [illegible] [illegible] कइ जार [illegible]
संघा [illegible] नद्य [illegible] कनाथ [illegible]
सुजसा [illegible] [illegible] समा [illegible] [illegible] गन्यासीह
जार श्रावकः [illegible] जार श्राविका नेउ [illegible]
[illegible] श्रीव [illegible] तेसितः
[illegible] परमेश्वरजी [illegible] जीवने
प्रतिबोधता एक [illegible] संघाते श्रीसमेतसिषर पर्वतः मोक्ष
पध्यास्याः नमः नमः श्री [illegible] विमल गिरी ने नमो न
मः ॥२०॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः ॥



हूंदाइ ।रम श्र श्रेयांसप्रभुजी एकहजारपुरुषसुंघातें दक्षा।।।
कस्तुभ ऋषभ स्वामीनेरगणधरः चौरासिहजारमुनिराज धारणि
प्रमुख एकलाख त्रिसहजारसाधवी बेलाखऽगणित्रसीहजारश्रा
वक च्यारलाख अठताळीसहजारश्राविका ऐंसि ८०धनुषदेह
मान चौरासीलाखवरसनूंआउ कंचनवरणसरीर षंडगलंछ
न एहवाश्रीश्रेयंसपरमेश्वरजीः श्रीविमलाचलगिरीइंपधार
श्रीविमलाचलनोवर्णवकस्यो। विहारकरता एकहजारपुर
षसंघातें समेतसिषरेंमोक्षपदवरस्या।।नमोस्तुविमलगिरीरा
ज श्रीसिद्धाचलजीनेंनमस्कारहजो।। ११।। श्री।।। ❀ ❀ श्री



॥वारसा॥श्री [illegible] ॥ [illegible] गणधर: [illegible]
[illegible]
हजार श्रावक: बार लाख अठत्रिस हजार श्राविका सिंहरथन्नषदेह
मान बहोत्तर लाषवरसनं आयु: रक्तवरण: सहिपलेठन बसंपु:
रपसंबुतलीधं विचरता श्रीसिद्धावलपधान्या: श्रीसिधावलजी
नं बकुमानवर्णव्युं विहारकरता बसकंनिसहित चंपानगरीडं
अणसणकरीनं परमपदनिराबाधपदपांम्या:॥ नमो [illegible] विमल
गिरी: पुंडरगिरी [illegible] ॥ १२ ॥



[illegible]

[illegible]

[illegible]

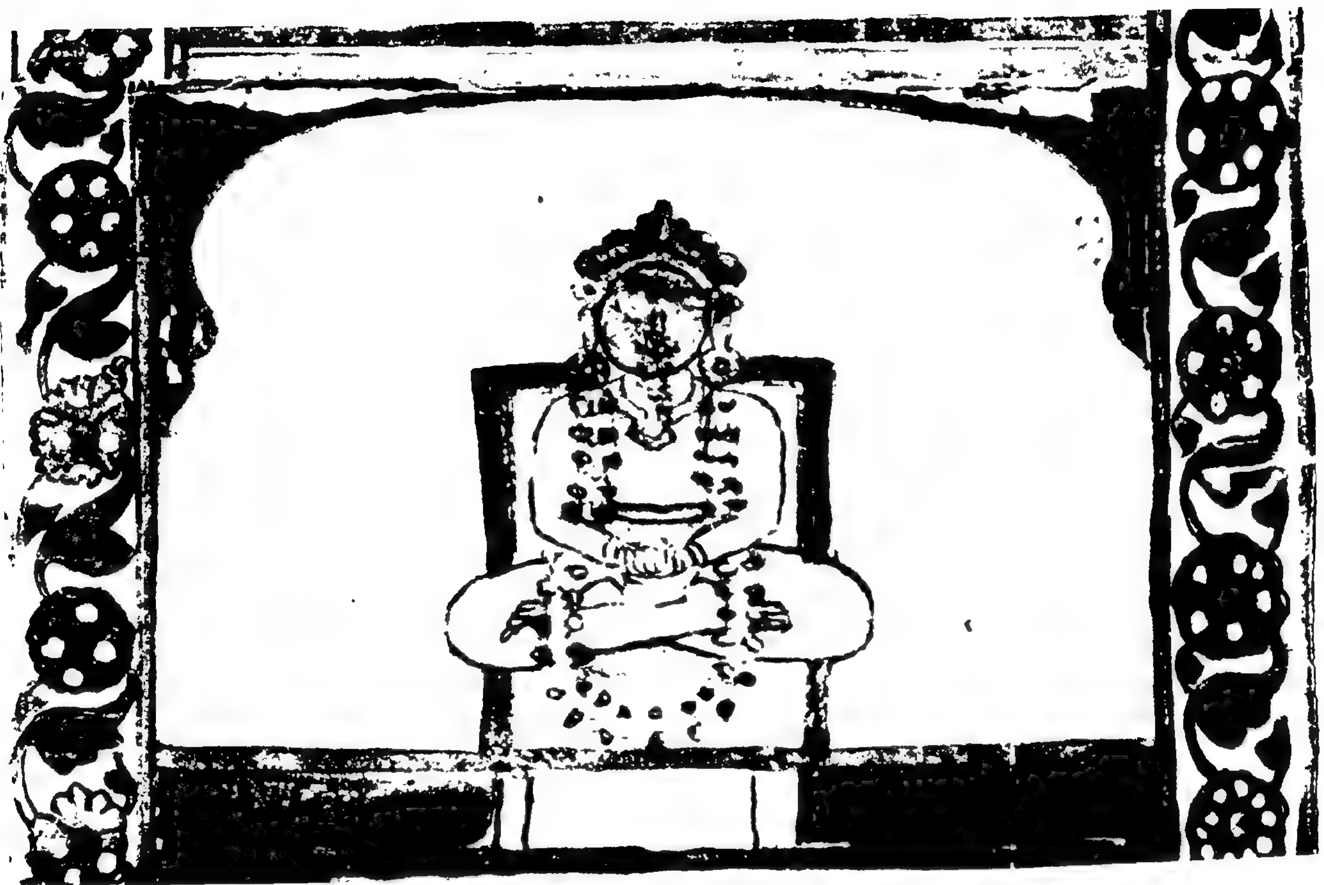
साधधनुबदेहमान साठलाषवरसनुं आयुः हेमवरणाक्ष अरलछनः
विहारकरता विमलगिरिराइ पधार्या॥ सिद्धगिरीनोवर्णनकरी विच
रता श्रीसमेतसिषरे जीऊपर अणसणकरी बहुजारमुनिराजसुं
सिधपदवेनेवर्या एहवा श्रीविमलपरमेस्वरजीने नम॰ [illegible]
[illegible] ॥ श्री॥ श्री





सहदजारमाधवी ‹ नाथवदजार आनक तारनाथदसह जार आनका
ंतामध प्रधदरमान त्रिमलापवरमत्र आयु क वनवर्ग मिवागानव
न विवरना आमिधावन‍ ॥ॐ॥ आत्मा आतामनावनवलाव विवाग
करना मानवजारपुरुषक आसंगतसिधंपधधदवसा आनन





ह्यपनरग्गाधरमनाथस्वामिः एकटजारपुरु॥ फचनालधं [illegible] रषपुक
ष: त्रेनालीसगणधर [illegible] ठट्जारसाध [illegible] सठटजार [illegible] क्ला. स्पे:
साध्वी बेलाषच्यारहजारश्रावक चारलाषनेरहजार श्राविका पीसा
लीसधनुषदेहमान दसलाषपूर्ववर्षआउ कंचनवर्णः वज्रलंछन वि
चरता श्रीविमलगिराइ पधास्या घणाजीवनैं निर्चनेमोर्ष्ठिमाक हिवि
हारकरता समेतसिषरे आ [illegible] मुनीसहीत श्रीधर्मनाथपरम
स्वरसिद्धपदपाम्या मोः पा [illegible] नमः [illegible] श्री॥ सपनावलविमल [illegible] च
लपदमानंदनेमोनमः नमस्कारहज्जोः ॥१५॥ श्रीः श्रीः



[illegible]
बत्रीसगणधर बासठिहजारसाधु बासठिहजारछसेंसाधवी बेल
ख बेतहजार श्रावक त्रिणलाखत्राणंहजारश्राविका च्यालीसधनु
षदेह: लाखवरसनुं आउ कंचनवर्ण: मृगलंछन ते श्रीशांतिपरमेस
रजी कुरुदसनें विषें हस्तिनागपुरीना कसमवंध्यानवनने विष
आवीसमोसर्या धर्मदेसनाकरी चक्रायुधराजाने वधामणी आ
वी वधामणीयाने पचंगपसायकरी चतुरंगणीसेनासहीत परमे
रजीने वांदवा आव्या त्रिपदक्षणा देई वांदीने जथास्थानकें बे
ठा पछे प्रभुजीइ धर्मदेसनाकरी सिधाचलजीनोवर्णकर्यो ते श्रीसि
धाचलजीनो वर्णवसांभली श्रीसिधाचलनेंदवाने भव्यजीवहर्ष
वंत थया एहवें चक्रआयुधराजाइं हाथजोडीनें परमेसरजीनें
विनतीकरी हेस्वामी श्रीसिधाचलजीना संघवीनी मुझनेंआज्ञा
ल्या तिवारें परमेसरजीना मुखआगलें इंद्रें सोनानो थालभ
र्यो वासखेप्यो तिवारें चक्रआयुधराजाने परमेस्वरें मस्तकें
वासखेप नाख्यो संघवीपद थाप्यु इंद्रमाल पेहरावि तिहांथी छ वस
[illegible]
देरासर आगल आपु मोणमय श्रीशांतिनाथपरमेश्वरजीनी मूरत:
मणिमयथापि देरासर आगलें चालें मंगलीक काम करी सर्वसंघ
सहित श्रीसिधाचलजी आव्या गिरिराजजीनो दर्शनकर्या मोती
गिरिराजवधाव्यो तिहांसोनामयकलकसा मुनिनेमलेत्या श्रीसि
धाचलजी उपरें चढ्या तिहां श्रीऋषभदेवजीनें भेटीनें पुजास्नात्र
मोहछवकरी अठाइकरीने पाछा हेठा उतरे ते त्रवेंतिहां
परमेसरजीना जिर्णउधारकराव्या तिवारें भरतचक्रवर्तीनि परं
बमादकराव्या भरतराजानीपरें तिर्थफरसनाकरी घरें आवी
[illegible]
[illegible]
री घणा मुनिराजसंघातें श्रीसंमेतसिखरें सिधपदवर्या मोक्षपाम्या
अनदासमयनें विषे श्रीसंमेतनिमिनाथपरमेश्वर पाउलिचेल
इ वसिहनामे उद्यानने विषें आविसमोसर्या तिहांएक सिंह कुमा
र कषाइनस्या फाल देइ परमेसरजी उपरें आव्या तिहां वीपा:
ओपन्या तिवारें बिमणी कषाइ नरासी तिवारें बीजीवार वलि फाल
दीधी तिमजपाछो पल्यो तिमवली त्रिगुणी कषायनरासी तिमवलि
त्रीजीवार फाल दिधी: तिमपाछो पल्यो तिवारें सिंह विचारवालागो
कोइक एमांहे पुरुष मोहोटो जनमा आव्या छे तेहने मे अवज्ञा कर
अहो माहाहरिकलगतियास्ये तेहनें परमेसरें पुरवभवकहिनें प्रति
बोध्या तिहां सिधाचलजीना सिहउद्याननेंविषे अणसणकरी:
आठमें देवलोकगया तिहांथी अवधिइं करीनें जोयुं के स्वे पुण्यें:
करि देवतापणंपाम्या तिहां शांतिनाथ परमेश्वरजीनो उपगार जांणी
सिंहवनने विषें परमेसरजीनो प्रसाद नीपजाव्यो तिहां परमेसरजीनी
पुजाभक्तिकरें तेनामनो विविनपुरें नह्ना कालथी तेवननुंनाम सि
हावन तिर्थथयु तिहां श्रीशांतिनाथपरमेसरस्यां सिंहउद्याननें वि
षे श्रीसिधाचलजीनो महिमा सांभलि अनेक भव्यजीवप्रति बोध
पामी चारित्रलेई अणसणकरी घणाजीवसिधीवर्या श्रीशांति
नाथ विहारकरता संमेतसिखरें नवसे मुनिसहित: मासखमण
करी सिधपदनें वर्या: नमोस्तु विमलगिरि। पुंडरीकगिरीनें
नमस्कार



॥ हवे सत्तरमा श्री कुंथुनाथ परमेसर॥ एक हजार पुरुषसुं केवली कं. पां
त्रिस गणधर। साठ हजार मुनि। साठ हजार छसें साधवी। एक लाष
ओगण्यासी हजार श्रावक त्रिण लाष एकासी हजार श्राविका पांत्रीस
धनुष देहमान कंचनवर्ण सरीर छागलंछन पंचाणु हजार वर्ष आ
विचरता श्री सिद्धाचलजी इं पधार्या अनेक भव्य जीवने श्री सिद्धाच
लमहातम वर्णवी नि विहार करता श्री समेतसिखरे एक हजार मुनि
संघाते मास संलेषणाइं सिधपदने वर्या नमोस्तु श्री कुंथुनाथ गिरनार
श्री सिद्धाचलगिरिने नमस्कार हुं जो॥ ॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री



[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]



॥ हवे ः ओगणिसमा ः श्रीमल्लिनाथपरमेसरजी ः त्रिणस्येंपुरुषसंघातेंः
वृत अठावीसगणधरः चालिसहजारमुंनी पंचावनहजारसाधवीः॥
एकलाषअनेंत्रासिहजारश्रावक त्रिणलाषसीत्तेरहजारश्राविकाःपं
चवीसधनूषदेहमांन निलवर्णः कुंभलंछन पंचावनहजारवर्षआयु
विचरताश्रीसिधाचलपधार्या सास्वतोतिर्थवांदी श्रीसमेतसिषरें
उपरेंः पांचसेंमुनीसंघातें॥सिधपदनेंवर्या। मोक्षेंपोहता ः नमोस्तुः
श्रीसिधगिरीनेंः नमोनमः॥ १९॥ श्रीः श्रीः ॥ श्रीः॥ श्रीः॥



॥नी: [illegible]

जा[illegible] पंचासहजार [illegible] मा

नाधपंचासहजा[illegible] श्री[illegible]

मलिंबन श्रीऋषभदेव वीतराग श्रीसिद्धाचल पधार्या देवे समव
सरण रच्युं त्रिगडे बेसी परषदा आगले श्रीविमलगिरिनो वर्णवी
सेष किधो श्रीऋषभदेवस्वामिना निर्वाण पछी श्रीरामचंद्रजी संघ लेइ
ने श्रीसिद्धाचलजीइं आवीने भरतचक्रीनी परे उद्धार करी ठामठाम
तीर्थनी थापना करीने घरे आवी पुत्रने राज्य आपी चारित्र लेइने विच
रता हवा श्रीसिद्धाचलजी आवी अणसण करी घणा मुनि साथे मो
क्षपद वर्या रामचंद्रजी वाले चंद्रराजाने वीरमतीइं कुकडा कर्यो ते
चंद्रराजाइं सोल वरस कुकडापणें भोगव्युं सोल मुं वरस काइक
व अधूरुं रहे श्रीसिद्धाचलउपर चैत्र मासनी आठाइ महोछव
करवाने घणा देवता घणा देवांगना घणा विद्याधर घणा मनुष्य
नी प्रभुनी पूजा स्तवना करे छे एहवे चंद्रनी स्त्री प्रेमलालछी तेच उ
आठाइ महोछव जोवाने सूर्यकुंड एहवे प्रेमलालछीइं सिवनटनी
सिवमाला कने थी आगमासनी अवध करी चंद्रराजा नामचुकडुं
पांजरु लिधुं ते पांजरु लेइ श्रीसिद्धाचलजीइं प्रेमला आवी परमे
श्वरजीना दर्शन करी सूर्यकुंडमांना ठी पूजा करी पछे सीनो महोछव
करी देवता देवांगना ने विद्याधर विद्याधरी तेनो नाटक जोइ चित
प्रसन्न थयुं अनेक मनोरथ मनमां पांजरुं उघाडी देखे [illegible]
ती सूर्यकुंड उपर आवी निलोप करे दिन करी सूर्यकुंडनी ।धजा
हवे जोतां गाम गाम सूर्यकुंड आव्या प्रेमलालछी साथमां पां
जरु छे ने पांजरमांहे रह्या कुकडाने विचार सोलवरसपणां पणें कु
र्या पण हजी माहरा कर्मनो पार आव्यो नथी माहरी आ स्था
थमांहे मानापणवरस थइ श्रीसिद्धाचलने विषे आव्या माहा कर्म
होयतो मटी जाइ एहवुं निश्चय करीने पांजरथी उडीने इम विचारीने
सूर्यकुंडमां नामचुंक झंपापात दीधो प्रेमलालछीइं देखी विचार्युं क
इपणनाथें आतमघात करी निरधारमाहरे जीवीने स्युं करवुं छे इम वि
चारीने प्रेमलालछीइं पण सूर्यकुंडमांहे झंपापात दिधो नामचुकडाने
कुंडवाडी हाथमां लिधो ते जब करतां छुटी गया मानवीनो
अवतार थयो सासनदेवताइं विक्रमणने कुंडमांहेथी काढ्या देव
ताइं कुसुमनी वृष्टि करी प्रेमलालछीइं राजानी स्तवना करीने पूजा क
री मकरध्वजराजाने वधामणी गइ राजाइं वधामणी देइ ने चतु
विधसहित श्रीसिद्धाचलजीइं आव्या पूजा स्नात्र महोछव कराव्यां
ते आनंद करी विमलपुराइं राजा चंद्रने लेइ आव्या श्रीसिद्धाच
लना महिमाथी चंद्रराजा घणा काल सुधी राज्य पाली श्रीऋषभदे
वः स्वामिनी देसनासांभलीवैराग्य पामी चारित्र लेइ घणे मुनिइं वि
हरता श्रीसिद्धाचल आवी अणसण करी चंद्रमुनिजी सिद्धपदने
वर्या हजार पुरुष श्रीऋषभदेवस्वामि समेत सिद्ध पदने प्राप्त
थ्या ते पद परमपद मोक्षपद पाम्या नमः श्रीविमलगिरि नमः
स्कार हजो श्रीसिद्धगिरिने नमस्कार हजो ॥ २१ ॥ श्री श्री श्री



।हवे एकवीसमा श्री नमिनाथ भगवानः एकहजार पुरुषक्ष व्रतस
न रगणधर वीसहजार एकतालीसहजार साधवी एकलाखसितेरहजार श्रावक
त्रिण लाष अडतालिसहजार श्राविका पनर धनुष देहमान दसह
जार वर्ष आउखं सुवर्ण पदम लंछन विहार करता श्री सिद्धाचल
पधास्या तिर्थनो महिमा घणो वरणवि ने तिहांथी विचरता एक मह
नकवीराजसं श्री समेतसिषरे मास एक अणसण करी सिद्धपद
वस्या मोक्षपद पाम्याः। श्री नमिजी नमास्तुः श्री सिद्धाचलगीरीने नमस्का
र हजो।।।२१।। श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्री।।



।हवें बावीसमा श्रीनेम [illegible]
मा वन [illegible]
णकनो [illegible]
दस धनुष्य देहमान कृष्णवर्ण [illegible] एक हजार वर्षआयु विचरता
श्रीसिद्धाचलजीनी तलेटीइं आव्या देशनादेइ गिरिराजनो वर्णव क
री तिवारें अनेक जीव श्रीसिद्धाचलजीनुं माहात्म सांभली वैराग्य पां
मी चारित्र अंगीकार करी अणसण करी घणा जीव सिद्धपदने वर्या:
तिहां थी श्रीनेमि भगवानें विहार कर्यो। वली श्रीनेमिनाथना शासननें
विषे श्रीकृष्णमोरारिना पुत्र सांब अने प्रद्युम्न महापराक्रमी श्रीनेमिनी
देसना सांभली वैराग्य पामी चारित्र लेइ साडा त्रण कोडि मुनि संघाते
श्रीसिद्धाचलें आवी आत्मतत्वनी गवेषणा करी निर्मल थई अणसण
करी मोक्षनें पाम्या। वली श्रीनेमिनाथना शासननें विषे श्रीनारद [illegible] थीमो
क्ष पाहता हवें पांचपांडव श्रीनेमनाथनी देसना सांभली श्रीसिद्धाचलजीना वर्ण
सांभली हर्ष धरता चतुर्विध संघ लें श्रीसिद्धाचलजी आवी उद्धार करा
व्या तां घणामर तीर्थनी स्थापनी करी पछें आवी राज्य ग्रहणादि पांचपांडवें चारित्र
लेइ मासमासखमणनें पारणें करता विचरता हस्तिनागपुरें आव्या विचार
कर्यो जे आ पारणें तो मासखमणनुं करीइं अने हवें तो बीजा मासखमणनुं
पारणुं श्रीनेमिनाथजीनें वांदीनें तिवारें करस्युं एहवो अभिग्रह लेइ पांच
पांडव मासखमणनें पारणें हस्तिनागपुरनें विषें गोचरी करी गाम बाहरें
आवतां सांभल्युं जे श्रीनेमिनाथ भगवान मोक्ष पधार्या ते वात सांभ
लीनें आहार कुंभारनें निमाडे परठवी सिद्धाचलजीइं आ
वी अणसण करी वीस कोडि मुनि सार्थे मोक्षें पोहता हवें श्रीनेमिनाथ
भगवान विहार करता श्रीगिरनार पधार्या।। पांचसें छत्रीस मुनि संघा
तें। श्रीगिरनारजी ऊपर मास उपवासें मो [illegible]



॥ईहेवेवाराम॥ श्रीपार्श्वनाथजीनेनमोनमः पार्श्वप्रमुखस्कंधक दसा
गधर: सोलह हजारमुनि आर्यासमणधनीतीग कुनाथ: श्रावक छ
जार श्रावक त्रिणलाखसत्तावीस हजार, श्राविका नवलाखसौरर
मान एक सो वरसनूं आउ नीलवर्ण नागलंछन विचरता श्रीसिद्ध
चलजी आवीने गिरिराजनो वर्णव कर्‍या श्रीपार्श्वनाथजी वारार
करता तेत्रीसमुनि संघाते: श्रीसमेतशिखरे सिधपदं नम्यां:॥श्री
रूपदनमा नमसाफवमतनिलीनः नमो श्रीपार्श्वनाथने:॥

श्रीअम्हधाराय नवमस्कार दो जपा



[illegible] स्वामी [illegible] पारगाम
[illegible] सामवी [illegible]
[illegible] आवीक [illegible] आविका [illegible] देव
[illegible] आवीरस्वामी विचरता श्रीसिद्धाचलेंसमो
[illegible] समोसरण [illegible]
[illegible] धाचलनोनि [illegible]
छे एहवें एकस्थानकें कनिराज एकलो काउसग्ग आतापना लेछे ति
वारें मित्रदेवता मित्रदेवनें पुछे छे जे ए मित्र आमुनीनो वानत कांइ जा
णो छो तिवारें देवमित्रनें मित्र कहे छे जे कनेतो कनो वातन थी जाणतो
पण आ जथी कें मातमाहीं वसमपहिला कुमरो विदेहें श्री श्रीमंधरस्वा
मिने वांदवा गया हता तिवारें श्रीसीमंधरस्वामी केहता हता महा अधर्म
नो करनार [illegible] एहवो करकंडुनो
राजा रत्नसंघ नापुरीनो छे ते एहने आकाश थकी कल्पवृक्षनुं पान
[illegible] एक [illegible] राजाइ वांच्यो ते वाच
नो राजा घरें [illegible] विचारवा लागो जे [illegible] एहवा पापथ
की किमछुटुं [illegible] आपघात करीनें मरवुं [illegible] विचारीनें एक
लो नगर बाहेरें राजा निकल्यो च्यार पहर रात [illegible] चाल्यो प्रभात थ
यो तिवारें कांइक माठी अटवीमां आंबाना वृक्ष तलें विसामो लेवानें
राजा बेठो मनमां विचारें छे जे आपघात कीणरीतें करीनें मरुं एहवें
मा अकस्मात् एक गाय [illegible] आवती राजानें मारवा धाइ तिवारें
[illegible] राजाइ षडक काढी गायनें प्रहार मुक्यो ते गायनां बे कटका
थया ते गायमांथी एक स्त्री नवजोवनी आभरण वस्त्र सहीत माहासु
[illegible] कातीधरती [illegible] राजानें कहे छे अरे अ
[illegible] तेदुर्बल
नें [illegible] पराक्रम [illegible] तिवारें बाहु
पुरुषपणें एहवां आपना वचन सांभली राजा [illegible] ते स्त्रीसामो धा
यो एहवें स्त्रइं कातीनो प्रहार मुक्यो ते राजाइं टाल्यो तिवारें तेस्त्रि
ई ते राजानें कहें पराक्रमवली काइं छे ते वचन सांभलीनें राजा घणु
रानोतानो थयो पण उठवानो बल सरीरमां रह्यो नथी तिवारें राजा
मनमां तिवारें छे अहो धिग् [illegible] जे अबला स्त्रीके वाइ तिण
मुकने जित्यो [illegible] एहवें [illegible] पाछिनेंज
वे तो गाय पण नही स्त्रिपण नाहि कातिनां प्रहार पण नहि एहवो देषी
राजा [illegible] विचारवा लागो जे [illegible] देषुं छुं के इंद्रजाल देषुं छुं एहवु
जिहां विचारें छे तिहां आवीका एहवें नामें राजानी गोत्रदेवी प्रगट थ
इ नें कहे छे हे [illegible] धर्मनें अजाण छे [illegible] पृथ्वीमांहि मिस
नाना प्रकारना तिर्थ करीस घणा दुःष सहिस तिवारें [illegible] नें समता [illegible]
[illegible] तिवारें [illegible] इं म कहिनें देवी अदृश्य थइ रा
जाइं ते देवीना वचन सांभली विचारवा लागो पण समता न आवी तिहां थ
की धर्मनी वात वेगली रही इम विचारीनें राजा वली आगल चाल्यो मार्गनें
विषे अनेक प्रकारना कष्ट नें सहतो छमास थइ गया एहवें एक पर्वत आवो

तेहेंवनहकेंछे तिहां आव्या एतलें सूर्य अस्त थयो तिवारें राजाइं वि
चार्युं रात्रइहां रहीइं एहवुं वीचारीनें तिहां रह्यो वृक्षनापांनडानासथा
रो करीनें उपरें बेठो चित्तनें विषें आलोचें छे जे हजि सुधी मुझनें समक
त आवी जो समकत आवी होत तो देवीइं मुझनें समकत धर्मस्थानक व
त्तावत इम वीचारतां राजानें निद्रा आवी एहवें एक राक्षस आव्यो ते क
हवा लागो अरे राजा तेरा पुंन अहंकार करीनें मारे हिमाहरूं धन
तो लेउं तेहनाफल जो तुझनें उदय आव्या छे इम कहीनें राक्षसें राजा
नें उपाडीनें चाल्या पर्वतनी कंधराइ जइनें राक्षस विचारवा लागो ए
राजानें भक्षण करूं तथा समुद्रमांनांषुं तथा पर्वतपरथी कपिल तोय
माहरो कषाय उपसमें नहीं एतला वानां मिं करूं माटा पथरनी सि
लाउपरें आपणीं आंफालों तोहनागोषरू देवमायाइं विकुरव्या तेउपरें
नीबी जोम कडांडा पछाडें तिम राजानें राक्षस पाडें तिम पछाडें तोही पि
ण राजानें लगारमात्र कषायनो उदय न थयो इम च्यार पहर राजानें उ
पद्रव करिनें राक्षस थाको राक्षसें विचार्यूं जे एतलो इम मरतो नथी कुं
हुं करूं थाकि तेपाछो वलीनें मकां ... पितानें कहें थयाने देवगातें का
वलीश्रावक थई तेहनें ... राजानें मारवा दमः अपुंडरीक पर्वत
छे ती ... जेह ... वार ... तेहनें मारवा ... ते ... समकत
तुं यकरीमां ... जाइस ... देवलोकनें ... स्पथई तिहांथी
राज्यमार्गें आवतां मुनिमहात्मादेसनासांभली चावलेई पुंडरीक गिरीइं
केंद्र राजा रीषि आव्या गिरीराजनें भेटीरिषभजिनमूर्त्तिनई वांदी श्री
वीरनें चरणनमी एकांत जइ स्कूजे मासमा आतापना लेछे तेहनें आज
मासमोदीवसछे देवता तेपोतानाधिंदेवंतनेंकहेछे तेमाटें हुं चारण
मुनीनें केवलज्ञान उपजसें देवता इमवात करतां तेमुनिराजनें
सुकलध्याननें जोगें केवलज्ञान उपनुं अंतगडकेवलीथई कंहमुन
जी सिद्धवस्या ... निमानः ... गिरि ... नमस्कार
करें छे एहवें ... राजा प्रश्ननेंवादीनें इहनें जोनें छे ... न
हनेंमो धर्मोगणधरजीइं श्रीसिधाचलनो जीनो महात्म पुछ्यो तिवारें श्री
वीरकहेंछे आराजा बेठाछे एहनावमनेंत्रियं पाहाकोढिउ महिपा
लएहवेनामें राजाथासें तेराजानें कोढिरोगसरिरमांथासें जेनगरमां
रहीनें जाइं गांमबाहिररहेस्यें रातजासें तोदिवसनरहेजायें कोढनी अ
स्पाध्यवेदना जोगवतोरहेस्यें चैत्रीनो अठाइमहोछवकरतां घणा विद्याध
रनी घणी विद्याधरीतं सेत्रुंजानें विषें आव्याछे तेतकालें पोतपोतानी दीसेंजा
इछे तिहांएकविद्याधरी भरतारनें कहेंछे स्वामी आपणविरुंजणा सूर्यकुंड
मांनाहि रूषभनें पुजी पछे आपणघरेंजइस्यें जे जायतेहनें जावादो तेमांभ
लीनें विद्याधरविद्याधरणी सुर्यकुंडमांनाहीपुजाकरी सांति कलसजलें
भरी विमानमांमेलीतिहांथी वेजणां चाल्या मार्गें आवता महिपालराज

कोढरोगे मरा आक्रंद करेछे तेहवि विद्याधरीने कस्तुरा आवि स्वामिन्
कणकोढिया हलवलेछे तिवारे विद्याधर कहेछे हेस्त्री महिपालनामे
कोढिओ राजाछे पुर्वकृत कर्मनुदय आव्याछे तिवारे विद्याधरी इम कहे जरे
गनो रुकु पायछे श्रीसिधाचलजी उपरे सूर्यवनमां सूर्यकुंडछे तेकुंडना
पाणिना बिंदुनो फरस थायतो रोग जाय एहवु सांभलीने राजना मुपर्थासांभल्
छे तेकुंडना पाणि दीठा वातसांभलीने विद्याधरी रूपधरतो कलस भरी आ
निजल लावमांछेड राजानासरीरें छांटानाख्या एतले अढार जातना को
ढनुंकलंक केहवा लागा अरराजा अमारनाहूरे सातभवनावैरहतो
हवे अमारा जोराथाको अमथी हवेरहवायनही एतला माटे हवे अ
मेजईछे इम केहेता थका रोग अदृश्यथया [illegible]
तेहवे वधामणा वरधामणा थया एहवो चमत्कार देखीने आव्या आव्या आराग्य
थिआ राजा वंधारणपुर्व तिवारे मुनि कहेपाछलेसातमेभवे तेमुनिना घा
तक होरहता तेपापथी तारे काह करवाडदेहछे तेथी कोढरोगउपना तेवा
तसांभली राजाने जातिस्मरण उपनु पुर्वभवदीठा तिवारे चारित्रविधिसें
ग्रहीने राजा श्रीसिधाचलजी आव्या तिहां अठाइ महोत्सव करी चारित्र
लेइ अणसण करीनेसीधाने तस्या नमानमा श्रीसिधाचलजी श्रीवि
मलाचलजी तिहां मोक्षगइ श्रीशेत्रुंजीनदीनो महिमा पुछ्यो तिवारे
श्रीवीरे नदीनो महिमा सांभलाव्यो छे एनदीमां नहाईने तथा हनुमतजी
संसार थाकी करे तिहां तिर्यंच हारकिलए [illegible] करे छे प्रथम तीर्थ
रभरतचक्रवर्तीनो बीजा उभार दंडवीर्यनो त्रीजो इसानइंद्रनो
चोथो माहेंद्रनो पांचमो ब्रह्मइंद्रनो छट्ठो भुवनपतीनो सा
तमो सगरचक्रीनो आठमो व्यंतरइंद्रनो नवमो चंद्रजसानो
दसमो चक्रायुधनो इग्यारमो रामचंद्रनो बारमो पांडवनो
तेरमो जावडसावडनो चौदमो बाहडदेमंत्रीनो पनरमो समरा
सारंगनो सोलमो करमासानो सत्तरमो उध्धार दुपसाह आचार्य
ना उपदेसथी वीमलवाहनराजाकरावसे [illegible]
[illegible]
[illegible] श्रीसत्रुंजय पुंडरीकगीरी सिधखेत्र वीमल
चल [illegible] सुरगीरी महागीरी पुन्यरासी श्रीपदा पर्वत
महातीर्थ सास्वता दृढसक्ति मुक्तिनय पुष्पदंत महा
पद्म पृथवीपीठ सुभद्र कैलासगीरी पातालमुला
अकर्मक सर्वकामद नमस्तु [illegible] श्रीसिधाचलजी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वाचे [illegible] १००० [illegible] श्री